ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 224-225**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

शिक्षा का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्यः भारतीय संदर्भ में एक विश्लेषण

1. डॉ० अर्चना श्रीवास्तव
2. डॉ० राजीव कुमार श्रीवास्तव

1. शिक्षा शास्त्र, 2. असिस्टेंट प्रोफेसर –समाजशास्त्र विभाग, श्री सुदृष्टि बाबा पी जी कालेज, सुदिष्टपुरी– रानीगंज. कॉलेज, बलिया (उ०प्र०) भारत

Received-05.06.2025, Revised-15.06.2025, Accepted-22.06.2025 **E-mail : archanasri2610@gmail.com**

सारांशः शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं, बल्कि समाज के विकास और पुनर्निर्माण का भी प्रमुख उपकरण है। समाजशास्त्र यह समझने का माध्यम है कि व्यक्ति और समाज किस प्रकार पारस्परिक रूप से एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं, वहीं शिक्षा शास्त्र इस प्रक्रिया को संस्थागत रूप प्रदान करता है। जब हम शिक्षा को समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से देखते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा सामाजिक संरचनाओं, सामाजिक गतिशीलता, वर्ग, लिंग, जाति और सांस्कृतिक मूल्यों से गहराई से प्रभावित होती है। भारत जैसे विविध सामाजिक–सांस्कृतिक देश में शिक्षा की सामाजिक भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

कुंजीभूत शब्द–आध्यात्मिक, राजनीतिक, मनोसामाजिक, शैक्षणिक, व्यवसायिक विकास के आयाम ।

शिक्षा और समाजशास्त्रः पारस्परिक अंतर्संबंध– शिक्षा और समाजशास्त्र के बीच गहरा अंतर्संबंध है। समाजशास्त्र यह अध्ययन करता है कि सामाजिक संस्थाएँ जैसे परिवार, धर्म, राजनीति, और शिक्षा कैसे समाज को आकार देती हैं। शिक्षा शास्त्र इन संरचनाओं में परिवर्तन लाने की संभावना प्रस्तुत करता है। समाजशास्त्री एमिल डुर्कहाइम के अनुसार, ष्शिक्षा वह माध्यम है जिसके द्वारा समाज अपनी अस्तित्व और एकता बनाए रखता है।

शिक्षा सामाजिककरण का माध्यम है– एक ऐसी प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक मूल्यों, परंपराओं और आचार संहिताओं को सीखता है। यह न केवल एक संस्थागत प्रक्रिया है, बल्कि व्यक्ति के सामाजिक निर्माण की भी आधारशिला है।

भारत में शिक्षा और सामाजिक स्तरीकरण– भारतीय समाज जाति, वर्ग, लिंग और धर्म पर आधारित एक जटिल सामाजिक संरचना है। यह संरचना शिक्षा की पहुँच, गुणवत्ता और परिणामों को प्रभावित करती हैः

1. जाति आधारित असमानताः दलितों और अनुसूचित जनजातियों को ऐतिहासिक रूप से शिक्षा से वंचित रखा गया। भले ही संविधान ने समानता का अधिकार दिया हो, परंतु व्यवहार में इन वर्गों की शिक्षा दर अभी भी कम है।

2. लैंगिक विषमताः ग्रामीण भारत में बालिकाओं की शिक्षा को लेकर अभी भी सामाजिक पूर्वग्रह मौजूद हैं। सामाजिक सुरक्षा, विवाह की परंपराएँ और घरेलू जिम्मेदारियाँ उनकी शैक्षिक प्रगति में बाधक बनती हैं।

3. आर्थिक वर्ग विभाजनः गरीब वर्ग के बच्चे प्रारंभिक शिक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ने को मजबूर होते हैं। निजीकरण ने शिक्षा को आम आदमी की पहुँच से बाहर कर दिया है।

शिक्षा के समाजशास्त्रीय सिद्धांत– शिक्षा के सामाजिक कार्य को समझाने हेतु विभिन्न समाजशास्त्रियों ने अनेक सिद्धांत प्रस्तुत किए हैंः

1. **एमिल डुर्कहाइम (Emile Durkheim):** उन्होंने शिक्षा को समाज के सामूहिक चेतना के संप्रेषण का साधन माना। विद्यालय को उन्होंने "छोटा समाज" कहा, जहाँ बच्चे सामाजिक अनुशासन और नैतिकता सीखते हैं।
2. **कार्ल मार्क्स (Karl Mark's**): मार्क्सवादी दृष्टिकोण में शिक्षा एक वैचारिक उपकरण है जो पूंजीवादी व्यवस्था को बनाए रखने में सहायक है। वह मानते थे कि शिक्षा सामाजिक वर्गों की असमानता को पुनः उत्पन्न करती है।
3. **मैक्स वेबर (Macks Weber):** उन्होंने शिक्षा को सामाजिक वैधता और स्थिति प्राप्ति का साधन बताया। उनके अनुसार शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति समाज में ऊँची स्थिति प्राप्त करता है।
4. **पाउलो फ्रेरे (Paulo Freire):** उन्होंने 'Banking Model' की आलोचना की और संवादात्मक शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया जिसमें शिक्षा को समाज में बदलाव लाने का साधन माना गया।

भारत में शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन– शिक्षा केवल सामाजिक स्थिरता का कारक नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी है। निम्नलिखित बिंदु भारत में शिक्षा के माध्यम से आए सामाजिक परिवर्तन को रेखांकित करते हैंः

1. **महिला सशक्तिकरणः** शिक्षा ने महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर दिया है।
2. **दलित चेतना का उदयः** डॉ. अंबेडकर जैसे शिक्षित नेताओं ने शिक्षा को सामाजिक समानता का माध्यम बनाया।
3. **जनजागरूकताः** शिक्षा ने जनता को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया है, जिससे लोकतांत्रिक चेतना का विकास हुआ है।

नई शिक्षा नीति (NEP 2020) और सामाजिक समावेशन – नई शिक्षा नीति 2020 एक समावेशी, बहु–आयामी और लचीली शिक्षा प्रणाली की ओर संकेत करती है : शिक्षा का सार्वभौमीकरणरू 3 से 18 वर्ष तक के बच्चों के लिए शिक्षा को सुलभ बनाना। स्थानीय भाषाओं में शिक्षारू इससे वंचित वर्गों के बच्चों को शिक्षा में सहजता होगी। लचीलापन और बहु–विषयक दृष्टिकोणरू छात्रों को अपनी रुचियों के अनुसार विषय चुनने की स्वतंत्रता।

हालाँकि इस नीति को क्रियान्वित करते समय सामाजिक अवरोधों को ध्यान में रखना आवश्यक है, अन्यथा यह भी एक नई विषमता उत्पन्न कर सकती है।

शिक्षा में असमानताओं की वर्तमान स्थिति –

भारत में प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक असमानता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैरू

वर्ग/वर्गीकरण	नामांकन दर	ड्रॉपआउट दर	गुणवत्तापूर्ण शिक्षा
अनुसूचित जाति	73%	32%	कम
अनुसूचित जनजाति	66%	45%	बहुत कम
सामान्य वर्ग	85%	15%	अपेक्षाकृत अधिक
शहरी क्षेत्र	90%	12%	अच्छा
ग्रामीण क्षेत्र	69%	33%	कमजोर

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

समावेशी शिक्षा की ओर कदम –

1. अधिनियमों के माध्यम से शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 ने 6–14 वर्ष के बच्चों को निशुल्क व अनिवार्य शिक्षा सुनिश्चित की। समान अवसर आयोग का गठन, विशेष रूप से पिछड़े वर्गों की शिक्षा में भागीदारी बढ़ाने हेतु।
2. **समाज आधारित मॉडल –** सामाजिक संस्थाएँ, पंचायतें और समुदाय मिलकर शिक्षा में परिवर्तन ला सकते हैं। शिक्षा और सामाजिक कार्य का समन्वय आवश्यक है।

शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता– शिक्षा सामाजिक सीढ़ी पर चढ़ने का एक प्रमुख माध्यम है। शिक्षित व्यक्ति न केवल आर्थिक रूप से समृद्ध बनता है, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है। शिक्षा निम्नलिखित प्रकार की गतिशीलता को जन्म देती है:

ऊर्ध्वगामी गतिशीलता (Upward Mobility)– जैसे एक गरीब परिवार का बच्चा शिक्षा प्राप्त कर अधिकारी बन जाता है।

क्षेत्रीय गतिशीलता– ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्रों में अवसर की तलाश।

आधारगत गतिशीलता (Structural Mobility)– जैसे महिलाओं का परंपरागत भूमिकाओं से बाहर आना।

शिक्षा और मूल्यबोध– शिक्षा केवल ज्ञान ही नहीं देती, वह जीवन मूल्यों दृ जैसे ईमानदारी, करुणा, समानता, सहिष्णुता, और सामाजिक उत्तरदायित्व दृ की भी शिक्षा देती है। मूल्य आधारित शिक्षा आज के समाज में अत्यंत आवश्यक है जहाँ भौतिकवाद और प्रतिस्पर्धा हावी होती जा रही है।

निष्कर्ष– शिक्षा और समाज एक–दूसरे के पूरक हैं। शिक्षा समाज को परिवर्तित करती है और समाज शिक्षा को दिशा देता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से शिक्षा केवल संस्था नहीं, बल्कि सामाजिक पुनरुत्पादन और परिवर्तन की प्रक्रिया है। भारत में शिक्षा की सफलता इस पर निर्भर करती है कि हम कितनी ईमानदारी से इसे समावेशी, समान और मूल्यनिष्ठ बना पाते हैं। शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और न्याय का सशक्त माध्यम बनाने के लिए केवल नीतियों की नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और समर्पण की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. दुर्गाप्रसाद, रमेशचन्द्र (2018). शिक्षा का समाजशास्त्र. प्रयाग पब्लिकेशन, वाराणसी।
2. डॉ. धर्मेंद्र नाथ सिंह (2021). भारतीय समाज और शिक्षा. भारतीय विद्या संस्थान, दिल्ली।
3. Emile Durkheim (1911). Education and Sociology. Free Press, New York.
4. Paulo Freire (1970). Pedagogy of the Oppressed. Continuum Publishing, London.
5. नंदा, बलवंत सिंह (2020). शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
6. Ministry of Education, Govt. of India (2020). National Education Policy 2020.
7. गोपाल, हरिशंकर (2017). समाजशास्त्र की आधारशिला. साहित्यम, पटना।
8. UNESCO (2022). Global Education Monitoring Report – India Country Profile.

*****